अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

श्री कैंची धाम के वर्तमान स्वरूप का विकास

शोध निर्देशक
डॉ.दीपा पांडे
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास) एवं विभागाध्यक्ष
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीखेत (अल्मोड़ा)

शोधार्थी
मंजरी जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास)
इं. प्रि. रा स्नात. म. वाणिज्य महाविद्यालय , हल्द्वानी
ई. मेल – joshimanjari99@gmail.com

सारांश – उत्तराखण्ड राज्य अपने देवस्थलों ,प्राकृतिक सौन्दर्य एवं आध्यात्मिक चिन्तन का केन्द्र होने के कारण देवों, ऋषि-मुनियों,तपस्वियों एवं सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। वर्तमान में भी अनेक भक्त एवं सैलानी देश -विदेश से इस देवोपमभूमि का दर्शन करने अगाध श्रद्धा के साथ आते हैं। उत्तराखंड के नैनीताल जनपद की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य दिव्य कैंची धाम अवस्थित है । 20 वी सदी के सुविख्यात और लोकप्रिय संत श्री नींब करौरी महाराज द्वारा स्थापित यह विश्वविख्यात धाम नैसर्गिक सौन्दर्य के साथ वास्तुकला की सादगी से पूरित है । कुमाऊँ की पहाड़ियों में बसा यह आश्रम दिव्य ऊर्जा ,शांत वातावरण और हनुमान मंदिर के लिए प्रसिद्ध है । इस पावन तपोभूमि में आध्यात्मिक साधको को संत श्री नीब करौरी महाराज जी की दिव्य उपस्थिति के जीवंत प्रमाण प्राप्त होते है । इस कारण पिछले कुछ वर्षो से इस धार्मिक स्थल की लोकप्रियता निरंतर बढ़ती जा रही है । वर्ष दर वर्ष यहाँ आने वाले साधकों और सैलानियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो रही है । धार्मिक पर्यटन में वृद्धि होने से स्थानीय लोगों को रोजगार के साधन प्राप्त हुए है । इस प्रकार यह स्थल आध्यात्मिक महत्तव के साथ स्थानीय व्यवसायों के लिए भी महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है । अतःइस प्रमुख आध्यात्मिक स्थल के वर्तमान स्वरूप का ऐतिहासिक अध्ययन करना ही इस शोध पत्र का उदेश्य है ।

कूट शब्द – संत, संस्कृति ,आध्यात्मिक ,आश्रम, पर्यटन

1.प्रस्तावना – आद्याशक्ति पार्वती की जन्मभूमि उत्तराखंड शान्त एवं स्वास्थवर्धक परिवेश के कारण प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियों की तपोभूमि रहा हैं। इस कारण उत्तराखण्ड असीम श्रद्धा से युक्त होने के कारण ही **'देवभूमि'** भी कहलाता है। इस भूमि की पवित्रता के कारण यहाँ अनेक धार्मिक स्थलों का आविर्भाव हुआ, जो उत्तराखण्ड को पर्यटन के क्षेत्र मे उच्च स्थान प्रदान करते है। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालुजन उत्तराखण्ड आते है । इस प्रकार अनेक धार्मिक स्थलों की उपस्थिति राज्य के पर्यटन उद्योग के लिए वरदान सिद्ध हुयी है।

उत्तराखंड के कुमाऊँ अञ्चल में नैनीताल से लगभग 17 कि. मी. एवं भवाली से 9 कि. मी. पर अनंत भक्तों की आस्था और विश्वास का केंद्र कैंची धाम स्थित है ।[1] इस पावन तीर्थ स्थल पर संत श्री नीब करौरी महाराज का आश्रम स्थापित है । यह विश्व प्रसिद्ध आश्रम सार्वभौमिक प्रेम, निस्काम सेवा और भक्ति को समर्पित है ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

संत श्री नीब करौली महाराज का जन्म सन 1900 में, वर्तमान उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के ***नागउ*** ग्राम समूह के ***अकबरपुर*** ग्राम में **मार्गशीर्ष माह में शुक्ल पक्ष अष्टमी** (अंग्रेजी कलेण्डर के हिसाब से 30 नवंबर 1900) को एक कुलीन, संभ्रान्त, वैभव-पूर्ण ब्राह्मण परिवार में हुआ था ।[2] अत्यन्त छोटी उम्र से ही संत श्री नीब करौरी महाराज का झुकाव आध्यात्म की तरफ होने लगा था । श्री नीब करौरी महाराज जी के अवतार का हेतु समष्टि का कल्याण एक ही स्थान में रहने से पूर्ण नहीं हो सकता था । उनका मानना था **"जो संत हमेशा विचरण करते है ,वो जनकल्याण कर पाते है चूंकि जो पानी हमेशा प्रवाहमान रहता है वो स्वच्छ रहता है** ।"[3] अतः इन्होंने जनकल्याण के निमित्त ग्यारह वर्ष की आयु में ही गृह त्याग दिया और एक तपस्वी साधक के समान विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया । संत श्री नीब करौरी महाराज अपने भक्तों के मध्य 'चमत्कारी बाबा' के नाम से जाने जाते हैं, चूंकि उनके साथ कई चमत्कार और दैवी घटनाएँ जुड़ी हैं।[4] श्री नीब करौरी बाबा के भक्त उन्हें श्रद्धा से 'महाराज' जी कहकर भी संबोधित करते है ।

संत श्री नीब करौरी महाराज के कुमाऊँ क्षेत्र में शुभागमन के उपरांत उन्होंने सर्वप्रथम तराई और हिमालय पर्वतमालाओं की तलहटी के स्थानों पर विचरण किया और उन्होंने अपनी लीलाओं के लिए विशेष रूप से नैनीताल क्षेत्र का चयन किया । भगवान् शिव और शक्ति के उपासक , सरल व्यवहार के पर्वतीय लोग साधु सन्यासियों और जोगियों के प्रति सम्मान का भाव रखते थे ।[5] हनुमान भक्त संत श्री नीब करौरी महाराज ने तपोभूमि कूर्मांचल में ज्यों ही प्रवास करना शुरू किया, हनुमान मंदिरों की श्रंखला का निर्माण होना शुरू हो गया । उनकी प्रेरणा और अनुकम्पा से नैनीताल में हनुमानगढ़, श्री कैंची धाम, भूमियाधार, काकड़ीघाट में मंदिरों का निर्माण हुआ। श्री नीब करौरी महाराज जी का सर्वाधिक प्रसिद्ध आश्रम कैंची धाम है । आध्यात्मिक रूप से समृद्ध इस आश्रम में देश – विदेश से अनेक भक्त महाराजी का आशीर्वाद और अनुग्रह प्राप्ति हेतु यहाँ आते थे । समय के साथ यह आश्रम आध्यात्मिक शांति और उन्नयन का स्रोत बन गया । श्री नीब करौली महाराज जी की शिक्षाएं आज भी लोगों का मार्गदर्शन कर रही है ।

इसी प्रतिष्ठा से आकर्षित होकर देश -विदेश के अनेकानेक जिज्ञासु एवं मुमुक्षु इस आध्यात्मिक केन्द्र में आते है । कैंची धाम, अमेरिकी बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनी एप्पल के सह संस्थापक स्टीव जॉब्स द्वारा यहाँ की यात्रा करने की चर्चा के कारण प्रसिद्ध हुआ हालांकि उनके यहाँ आगमन से पूर्व ही श्री नीब करौरी महाराज का निधन हो गया था ,फिर भी उन्हें आश्रम से जो आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ ,उससे उनके जीवन में अनेक बदलाव आए ।[6] स्टीव जॉब्स ने फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग को श्री कैंची धाम आने के लिए प्रेरित किया कालांतर में फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग और भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी विराट कोहली जैसी प्रभावशाली हस्तियों का कैंची धाम में आगमन हुआ ।[7] इस कारण कैंची धाम लोकप्रिय

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

तीर्थस्थल बन गया। धार्मिक स्थल के रूप में लोकप्रिय होते ही कैंची धाम का कायाकल्प हो गया है । वर्तमान मे यह एक आध्यात्मिक तीर्थस्थल के रूप मे विकसित हो गया है। पूर्व मे कैंची धाम में कम भक्त आते थे और यहाँ मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। लेकिन वर्तमान मे यहाँ प्रतिदिन औसतन पांच हजार श्रद्धालु दर्शन कर रहे है। इस तरह धार्मिक पर्यटन मे वृद्धि होने से इस क्षेत्र में रोजगार और आधारभूत सुविधाओं में भी वृद्धि हो रही है। देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोग यहाँ जमीन खरीदकर होम स्टे स्थापित कर रहे है फलस्वरूप होटल व्यवसाय का भी विकास हो रहा है।

2.कैंची धाम की स्थापना एवं विकास – कैंची धाम का क्षेत्र ग्राम पंचायत मल्ला निगलाट के अंतर्गत शामिल है। यह क्षेत्र वनों से आच्छादित एवम् पर्वत मालाओं से घिरा हुआ है। यहाँ उत्तर गंगा नामक एक छोटी नदी प्रवाहमान है। इस क्षेत्र मे दो पहाड़िया कैंची यानि कैंची के आकार में एक -दूसरे को काटती है ,अतः आश्रम का नाम कैंची पड़ा।[8] यहाँ आश्रम संस्थापित करने की अवधारणा 1962 में अस्तित्व में आयी, जब पूजनीय संत श्री नीब करौरी महाराज का कैंची गाँव में पदार्पण हुआ। महाराज जी ने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से कैंची क्षेत्र की आध्यात्मिक ऊर्जा की शुभता को पहचान लिया। उन्होंने इस क्षेत्र में एक आश्रम स्थापित करने के लिए एक दिव्य आह्वान की अनुभूति की।

यह सिद्ध क्षेत्र आदिकाल से ही संत-महात्माओं को आकर्षित करता रहा है। 20वीं शताब्दी के आरम्भ में यहाँ चट्टानों से निर्मित एक प्राकृतिक गुफा में सिद्ध संत सोमबारी गिरि तपस्या करते थे। संत पुरूष जिस स्थान पर भी निवास करते हैं, वह स्थान सिद्ध स्थानों की श्रेणी में आ जाता है।[9] श्री नींब करौरी महाराज ने सिद्ध संत सोमवार गिरी की इस सिद्ध स्थली को अपने दिव्य चक्षुओं से पहचान लिया और इस सिद्ध स्थल पर मंदिर स्थापित करने का निर्णय लिया। कैची क्षेत्र आश्रम व मंदिर के निर्माण से पूर्व एक वन प्रदेश था। श्री नीब करौरी महाराज ने एक शिला पर बैठकर अपने भक्तों से कहा था- **'यहाँ आश्रम बनेगा और मंदिर बनेंगे जिनकी ख्याति विश्वभर में फैलेगी"**।[10] इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक दिन श्री नीब करौरी महाराज कैंची ग्राम निवासी अपने शिष्य श्री पूर्णानन्द तिवारी के घर पधारे और उन्हें साथ लेकर कैची क्षेत्र पहुचें। उस समय कैंची में श्री प्रेमी बाबा पूजा-अर्चना इत्यादि कार्य करते थे। श्री नीब करौरी महाराज ने प्रेमी बाबा और श्री पूर्णानन्द तिवारी जी से पवित्र गुफा एवं सोमबारी बाबा के पवित्र हवन वेदिका की जानकारी प्राप्त की।[11] इस प्रकार कैंची धाम के वर्तमान स्वरूप के निर्माण कार्य का शुभारम्भ हुआ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

मंदिर निर्माण के प्रथम चरण मे हवन कुण्ड के ऊपर चबूतरे का निर्माण करवाया गया । इस कार्य हेतु क्षेत्रीय जनता ने श्रम दान किया । जब श्री नीब करौरी महाराज जी के भक्त चबूतरा निर्माण कर रहे थे, तब वन विभाग के कर्मचारियों ने आपत्ति की । तब महाराज ने अपने भक्त तत्कालीन वन विभाग के चीफ कन्जरवेटर आर०के० सोनी से इस भूमि की नाप करवायी और यह भूमि मंदिर और आश्रम के निर्माण हेतु प्राप्त कर ली। कालांतर में तत्कालीन वन मन्त्री चौधरी चरण सिंह ने यह संपूर्ण भूमि श्री नीब करौरी महाराज जी को मंदिर और आश्रम हेतु लीज में प्रदान की।[12] इस प्रकार सन् 1962 में श्री नीब करौरी महाराज ने कैंची में मंदिर और आश्रम निर्मित करने कार्य सम्पन्न करवाया । श्री नीब करौरी महाराज स्वयं अपने दिशा निर्देशन में मंदिर और आश्रम के सभी निर्माण कार्य करवाये। इस क्षेत्र के जंगल को साफ़ करके यहाँ आयताकार मंच का निर्माण किया गया, जिसमें संकटमोचक हनुमान मंदिर स्थापित किया गया । हवन कुण्ड के ऊपर बने चबूतरे में हनुमान जी के दिव्य विग्रह की स्थापना की गयी और भगवान लक्ष्मी नारायण, भगवान शिव-पार्वती, श्री गणेश, और कार्तिकेय की मूर्तियाँ भी मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठित की गयी।[13] इस मंदिर का निर्माण बिना किसी पूर्व निर्धारित योजना और डिजाइन के प्रारंभ हुआ ।

हनुमान मंदिर के बाद शिवालय, लक्ष्मी नारायण मंदिर की स्थापना की गयी । मंदिर के सामने श्री नीब करौरी महाराज जी ने माँ विंध्यवासिनी को स्थापित किया। श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के पावन स्थल कैंची मंदिर में रामकुटी, विष्णु कुटी, राधा कुटी, कृष्ण -बलराम कुटी, श्याम कुटी इत्यादि संरचनाओं का निर्माण करवाया गया तदुपरांत हेतु एक कुटिया और धर्मशाला का निर्माण करवाया गया। श्री नीब करौरी महाराज जी राधा कुटी में निवास करते थे और कृष्ण कुटी में महाराज की अनन्य शिष्या सिद्धी मां निवास करती थीं। कुटिया के बरामदे में वह कम्बल श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ रखा रहता है ,जिसका श्री नीब करौरी महाराज प्रयोग करते थे।[14] इन कुटियाओं में महाराज जी के विभिन्न मुद्राओं के बड़े छायाचित्र लगे हैं।।मंदिर के बगल में एक गुफा स्थित है, जिसमें महाराज जी अपना समय प्रार्थना करने में व्यतीत करते थे ।

सड़क से कैंची धाम तक जाने के लिये उत्तर गंगा नामक नदी के ऊपर लकड़ी का कच्चा पुल बना हुआ था। श्री नीब करौरी जी महाराज अक्सर इसी पुल पर बैठा करते थे।[15] श्री नीब करौरी जी महाराज के चमत्कारों ने जनमानस को आकर्षित किया । अतः उनके दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु दूर -दूर से भक्त यहाँ आने लगे । इस प्रकार धीरे -धीरे यहाँ भजन ,कीर्तन और भंडारे का क्रम प्रारंभ हो गया । इस संदर्भ में जया प्रसाद लिखती है कि - **"वहां पहुंचकर जैसे ही हम क्षिप्रा नदी पर बने लकड़ी के पुल को पार करते है , 'हरे रामा हरे कृष्णा' संकीर्तन की मधुर ध्वनि हमारे कानों में गूंजने लगती है . नीम करोली महाराज विंध्यवासिनी मंदिर के पास बने बरामदे में अपने तखत पर बैठे, भक्तों की भीड़ से घिरे रहते थे. भक्तों के**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

इस समूह में अनेक विदेशी, उच्च पदस्थ अधिकारी, राजनेता और स्थानीय महिलाएं होती थीं।"[16]

11 सितम्बर ,1973 में श्री नीब करौरी महाराज के महाप्रयाण के बाद वृन्दावन से उनका अस्थि कलश कैंची धाम लाया गया और अस्थिकलश स्थापना हेतु भक्तगणों के सहयोग से महाराज जी का समाधी मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ ।[17] महाराज जी के अस्थि कलश के ऊपर ही उनके विग्रह की भी स्थापना हेतु 15 जून ,1976 का दिन नियत किया गया । महाराज जी की अनन्य शिष्या व उत्तराधिकारी श्री सिद्धि मां ने इस कलश की यथोचित सुरक्षा हेतु इस स्थान पर मंदिर बनवाने की इच्छा व्यक्त की और भक्तों से कहा अस्थि कलश के ऊपर ही महाराज के विग्रह की स्थापना होनी चाहिए। श्री नीब करौरी महाराज का विग्रह जयपुर से बनकर आया और 15 जून, 1976 को भव्य समारोह के साथ उसकी प्रतिष्ठा सम्पन्न हुयी ।[18] महाराज जी की जय उद्घोष से वातावरण गुंजायमान हो गया और इस प्रकार विग्रह रूप में श्री नीब करौरी महाराज कैंची धाम के साक्षात् विराजित हो गए ।

मंदिर निर्माण और मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा के बाद यह मंदिर भारत सहित विश्व के अन्य देशों में भी प्रतिष्ठित आध्यात्मिक केंद्र बन गया । यह स्थान नैसर्गिक सुन्दरता और आध्यात्मिकता का अदभुद संयोजन प्रस्तुत करता है । वर्तमान यह में सर्वाधिक चर्चित आध्यात्मिक केन्द्रों में से एक है । मंदिर परिसर में पारंपरिक उत्तर भारतीय शैली की वास्तुकला है । आध्यात्मिक साधक और पर्यटक दोनों ही मंदिर की प्राकर्तिक सुन्दरता और पारंपरिक वास्तुकला का आनंद लेते है ।

महाराजजी के मंदिर के दिव्य कक्ष के भीतर धार्मिक प्रथाएँ भक्तों के आध्यात्मिक जीवन में एक केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। पवित्र मंत्रों का जाप, विशेष रूप से नीब करौरी महाराज का नाम, पूरे मंदिर में गूँजता है, जिससे वातावरण दिव्य तरंगों से भर जाता है। इस प्रकार ,महाराजजी का मंदिर त्योहारों और उत्सवों के दौरान भक्ति का एक आनंदमय केंद्र बन जाता है।

संत सोमबार गिरि जो एक सिद्ध पुरुष थे, जो शिव के अनन्य भक्त थे। उनके काल में कैंची क्षेत्र में एक शिवलिङ्ग था ,जिसकी वह साधना करते थे। सन् 1982 नवम्बर माह में श्री सिद्धि माँ ने यहाँ भागवत का आयोजन किया और इस अवसर पर उस स्थल मे मंदिर का निर्माण करवाया।[19] मंदिर निर्माण में चट्टान वाले स्थान को उसी प्रकार रखा गया है। कैंची आश्रम में ही सोमबारी गिरि गुफा के नाम से यह स्थल जाना जाता है।

श्री नीब करौरी महाराज एक समर्पित हनुमान भक्त थे । कई श्रद्धालु मानते हैं कि श्री नीब करौरी महाराज भगवान् हनुमान के अवतार थे। देश -विदेश से भक्तों का कैंची धाम में महाराज जी से आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु आगमन होता रहता था ,इस तरह समय के साथ कैंची धाम आध्यात्मिक गतिविधियों यथा ध्यान ,अध्यात्म पर सामूहिक चर्चा ,भजन कीर्तन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

हेतु एक व्यस्त स्थल बन गया। वर्तमान में भी श्री नीब करौली महाराज जी की शिक्षाएं जनमानस को प्रभावित कर रही है और उन्हें प्रेम ,भक्ति और सेवा हेतु प्रेरित रही है। कैंची धाम के पवित्र कक्ष में नीब करौरी महाराज की शिक्षाओं ने सांप्रदायिक सद्भाव के माहौल को बढ़ावा दिया। आश्रम विविध पृष्ठभूमियों का एक मिश्रण केंद्र बन गया है।

कैंची स्थल में कई महान संतों के पदार्पण से यह स्थान एक पवित्र धाम के रूप में स्थापित हो चुका है। यहाँ वर्ष भर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। इस पवित्र स्थल में भक्त ध्यान , योग-जप, सेवा के साथ -साथ आध्यात्मिक बैठकों में सहभागिता करते है। कैंची धाम में भक्त न केवल पारंपरिक प्रसाद, जैसे-मिठाई, फल और पैसे देकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं. बल्कि कंबल चढाने की परंपरा को भी जारी रखे हैं।
श्री नीब करौरी महाराज ने आश्रम के निकट ही डाकघर और रोडवेज स्टेशन भी स्थापित करवा दिया था ,जिससे यह धार्मिक स्थान भक्तों के लिए सुविधाजनक हो गया। श्री नीब करौरी महाराज की उपस्थिति में कैंची धाम में प्रतिदिन भण्डारा हुआ करता था ,जिसमें सभी श्रद्धालुओं, संन्यासियों और आगंतुकों को भोजन (प्रसाद) ग्रहण कराया जाता था। सन्तों और सन्यासियों को दक्षिणा और कम्बल भी प्रदान किये जाते थे। मंदिर की देखरेख हेतु ट्रस्ट का गठन किया गया है। देश-विदेश के दानदाताओं के दान से यह आश्रम संचालित होता है। कैंची धाम की गतिविधियों की देख-रेख के लिए स्थापित श्री नीब करौरी महाराज ट्रस्ट महाराजजी की शिक्षाओं के संरक्षण और प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ट्रस्ट सक्रिय रूप से धर्मार्थ पहलों में संलग्न है, जो निःस्वार्थ सेवा की विरासत को आगे बढ़ा रहा है।[20]

3.कैंची धाम में वार्षिक उत्सव

कैंची धाम एक आध्यात्मिक तीर्थस्थल के रूप में विकसित हो रहा है। कैंची धाम के मंदिरों और मूर्तियों की स्थापना 15 जून को हुयी है ,अतः 15 जून को प्रतिष्ठा दिवस मनाया जाता है ,जिसमें एक माह पूर्व से ही यहाँ अखण्ड रामायण, भजन, हनुमान चालीसा का पाठ होता रहता है। प्रत्येक वर्ष 15 जून(कैंची धाम स्थापना दिवस) को यहाँ विशाल भंडारे और भव्य मेला भी आयोजित होता है।[20] सन् 1964 से यह भव्य मेला हर वर्ष आयोजित किया जाता है । आज भी 15 जून को भंडारे में लाखों लोग शुद्ध घी के पारंपरिक विधि से निर्मित मालपुवों का प्रसाद ग्रहण करते है । मथुरा, हसनपुर इत्यादि क्षेत्रों से आमंत्रित कारीगर लोकप्रिय मालपुवे बनाने का कार्य करते है। 15 जून के मेले के एक महीने पूर्व से ही महाराज जी के मंदिर में अखंड हनुमान चालीसा का पाठ प्रारंभ हो जाता है, जो 14 जून तक अनवरत चलता है, इसके तुरंत बाद यज्ञशाला में रामचरितमानस का पाठ होता है, जिसका परायण 15 जून को हवन यज्ञ से होता है। भंडारे में लोकप्रिय मालपुए का विशेष महत्तव है। मेले के सफल आयोजन के लिए ट्रस्ट और स्थानीय प्रशासन द्वारा विशेष व्यवस्था की जाती है। भक्तजन कई कि.मी पहले से ही कतारबद्ध होकर श्री नीब करौरी महाराज जी के दर्शन और प्रसाद ग्रहण करते है। इस मेले से स्थानीय व्यवसाय जैसे होटल,दुकानें और परिवहन सेवाओं को लाभ

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

मिलता है । मंदिर के आस -पास के गाँव मे रहने वाले लोगों को मंदिर मे सेवा करने प्रसाद बेचने औअन्य पर्यटन – संबंधी व्यवसाय में रोजगार की प्राप्ति होती है ।

वार्षिक भंडारा, महाराजजी द्वारा शुरू की गई परंपरा, निःस्वार्थ सेवा की भावना का उदाहरण है। इसमें स्वयंसेवक भोजन तैयार करने, प्रसाद वितरित करने और तीर्थयात्रियों के आराम को सुनिश्चित करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। इस प्रकार कैंची धाम के त्योहार सामुदायिक सद्भाव और भक्ति को अभिव्यक्त करते है ।

4.कैंची धाम एक आध्यात्मिक प्रकाशस्तंभ के रूप में - आध्यात्मिक गुरु श्री नीब करौरी महाराज जी ने यहाँ गुरु पूर्णिमा ,रक्षा बंधन ,जन्माष्टमी एवं शरद कालीन नवरात्रि में पूजा और हवन की पद्वति प्रारंभ की ,जो आज भी यथावत चल रही है । कैंची धाम के प्रमुख उत्सव- प्रतिष्ठा दिवस (15 जून), गुरु पूर्णिमा और आश्विन की नवरात्रियाँ हैं। इसके अतिरिक्त भी यहाँ श्रद्धालुओं का नियमित आवागमन रहता है। कैंची धाम में सभी धार्मिक और सांस्कृतिक त्योहार धूमधाम से आयोजित किए जाते है । प्रतिदिन प्रातः और सायं मंगल आरती होती है । हजारों की संख्या में भक्त पूजा और भंडारों में सम्मिलित होते है । श्री नीब करौरी महाराज जी से सम्बंधित अध्यात्म की पुस्तकें एवं अन्य सामग्री भी बिक्री हेतु यहाँ उपलब्ध है । आश्रम परिसर के बाहर फल- फूल और प्रसाद की अनेक दुकानें है ।

5.श्री नीब करौरी महाराज की शिक्षाएँ और आध्यात्मिक दर्शन- श्री नीब करौरी महाराज की शिक्षाओं का सार सरल लेकिन गहन मंत्र में समाहित है: "सभी से प्यार करें, सभी की सेवा करें और भगवान् को याद रखें।" [21]इन सिद्धांतों की यह त्रिमूर्ति उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन की आधारशिला बन गयी है , जिसमें प्रेम की परिवर्तनकारी शक्ति, मानवता की निःस्वार्थ सेवा और परमात्मा का निरंतर स्मरण पर बल दिया गया। यह सरल दर्शन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के साधकों को गहनता से प्रभावित करता है। महाराजजी ने जाति, पंथ और धर्म की सीमाओं से परे आध्यात्मिकता की सार्वभौमिकता पर जोर दिया। हनुमान चालीसा का जाप, भगवान् हनुमान को समर्पित भक्ति भजन, श्री नीब करौरी महाराज के मार्गदर्शन में कैंची धाम में एक केंद्रीय अभ्यास बन गया है। महाराज जी ने हनुमान चालीसा के पाठ पर बहुत जोर दिया, इसे दिव्य आशीर्वाद और सुरक्षा का आह्वान करने का एक शक्तिशाली साधन माना।

महाराजजी की शिक्षाएँ साधकों का मार्गदर्शन, प्रेरणा और मार्ग रोशन करती रहती हैं। उनकी शिक्षाएँ आश्रम की दीवारों तक ही सीमित नहीं थीं, उन्होंने भक्तों के दैनिक जीवन तक उनका विस्तार किया। इस तरह आश्रम, अपनी सरल संरचनाओं और शांत वातावरण के साथ, महाराजजी की, आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र बन गया। श्री नीब करौरी महाराजजी ने

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

11 सितंबर, 1973 को अपना भौतिक रूप छोड़ दिया, लेकिन उनकी आध्यात्मिक उपस्थिति कैंची धाम और उसके बाहर के कक्षों में गूँजती रहती है। आश्रम् आध्यात्मिक गतिविधियों का एक जीवंत केंद्र बना हुआ है, जहाँ भक्त महाराजजी द्वारा स्थापित परंपराओं को जारी रखे हैं।

6. आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र

वर्तमान मे कैंची धाम एक आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र के रूप मे उभर रहा है ,फलस्वरूप आस - पास के क्षेत्रों मे भी पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है। इस प्रकार कैंची धाम न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह स्थानीय व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक इंजन भी है। कैंची धाम मंदिर में प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। इसके साथ ही मंगलवार ,शनिवार और रविवार को यहां श्रद्धालुओं की भीड़ अधिक होती है। जिस कारण यहां आने वाले श्रद्धालु और हाईवे से गुजरने वाले अन्य वाहन घंटों जाम की लंबी-लंबी कतारों में खड़े रहते हैं अतः उत्तराखंड सरकार द्वारा धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने हेती चलायी जा रही मानसखंड मंदिर माला मिशन में कुमाऊं क्षेत्र के प्रसिद्ध कैंचीधाम मंदिर परिसर को भी सम्मिलित किया गया है ।[22] इसके अंतर्गत मंदिर का सौन्दर्यीकरण किया जायेगा ।इसके अलावा धाम के विकास को लेकर अनेक विकासात्मक व सुंदरीकरण कार्य प्रस्तावित है।

निष्कर्ष – सादगी, प्रेम और गहन आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण श्री नीब करौरी महाराज की विरासत समय और स्थान की सीमाओं से परे है। 1973 में उनकी महासमाधि के बाद भी उनका प्रभाव भक्तों के जीवन में व्याप्त है। कैंची धाम उनकी शिक्षाओं का एक जीवंत प्रमाण है, एक ऐसा स्थान जहाँ महाराजजी की दिव्य उपस्थिति उन साधकों को महसूस होती है, जो यहाँ आध्यात्मिक मार्गदर्शन की खोज में आते हैं। श्री नीब करौरी महाराज स्वयं सांप्रदायिक सद्भाव और निःस्वार्थ सेवा को महत्त्व देते थे और यही कैंची धाम की विशेषता है। लोकख्यात कैंचीधाम मंदिर सामाजिक समरसता का केंद्र है । यहाँ सभी पृष्ठभूमि के श्रद्धालुओं का अभिनंदन किया जाता है। सनातन संस्कृति से संबंधित सभी पर्व यहाँ आयोजित किए जाते है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर देखा जाय तो यह धार्मिक स्थल पर्यटन ही नहीं अपितु रोजगार, और आर्थिक विकासके क्षेत्र में भी इस नवगठित राज्य को समृद्धशाली बनाने में अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है। इस प्रकार ,कैंची धाम का सामाजिक, धार्मिक,आर्थिक ,सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्तव है। यह आश्रम हमारी सनातन संस्कृति की धरोहर है अतःइसका संरक्षण एवं प्रोत्साहन सम्पूर्ण समाज का दायित्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)
1.शर्मा, महेश दत्त : कैंची धाम के बाबा श्री नीम करोली महाराज, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली,2024

2. शर्मा, कुसुम: महाप्रभु महाराज जी श्री नीब करौरी बाबा-पावन कथामृत, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2024

3. मुकुन्दा, अनन्त कथामृत बाबा नीब करौरी जी महाराज. श्री कैंची धाम हनुमान मंदिर,1997

4. शर्मा, कुसुम: महाप्रभु महाराज जी श्री नीब करौरी बाबा-पावन कथामृत, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2024

5.अमर उजाला: प्रेरणापुंज बाबा नीब करौरी, अमर उजाला पब्लिकेशन, हल्द्वानी 2017

6.india.news18.com/news/tech/steve-jobs-who-deeply-influenced-by-indian-spiritualism-visits-baba-neem-karoli-inspired-by-mystic-guru-fascinating-story-5370123.html

7.india.news18.com/news/tech/steve-jobs-who-deeply-influenced-by-indian-spiritualism-visits-baba-neem-karoli-inspired-by-mystic-guru-fascinating-story-5370123.html

8. शर्मा, महेश दत्त: कैंची धाम के बाबा श्री नीम करोली महाराज, प्रभात प्रकाशन ,2024 ,नई दिल्ली

9. शर्मा, महेश दत्त: कैंची धाम के बाबा श्री नीम करोली महाराज, प्रभात प्रकाशन, 2024 ,नई दिल्ली

10. राजीदा, रवि प्रकाश पाण्डे, अलौकिक यथार्थ श्री नीब करौरी जी महाराज, 1983 श्री हनुमान मंदिर एवं आश्रम कैचीधाम

11. राजीदा, रवि प्रकाश पाण्डे, अलौकिक यथार्थ श्री नीब करौरी जी महाराज ,1983 श्री हनुमान मंदिर एवं आश्रम कैचीधाम

12. जोशी प्रकाश चन्द्र 'मुकुन्दा' प्रेमावतार अर्जुन दास आहूजा मद्रास ,1992

13. राजीदा, रवि प्रकाश पाण्डे, अलौकिक यथार्थ श्री नीब करौरी जी महाराज, 1983 श्री हनुमान मंदिर एवं आश्रम कैचीधाम

14 .शर्मा, महेश दत्त : कैंची धाम के बाबा श्री नीम करोली महाराज, प्रभात प्रकाशन ,2024 ,नई दिल्ली

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)
15. राजीदा, रवि प्रकाश पाण्डे, अलौकिक यथार्थ श्री नीब करौरी जी महाराज ,1983 श्री हनुमान मंदिर एवं आश्रम कैचीधाम
16. प्रसाद ,जया :श्री सिद्धि माँ ,पेंगुइन बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ,2022
17. जोशी ,प्रकाश चन्द्र 'मुकुन्दा' प्रेमावतार, अर्जुन दास आहूजा ,मद्रास ,1992
18। जोशी, प्रकाश चन्द्र 'मुकुन्दा' प्रेमावतार, अर्जुन दास आहूजा, मद्रास ,1992
19. राजीदा, रवि प्रकाश पाण्डे, अलौकिक यथार्थ श्री नीब करौरी जी महाराज (1983) श्री हनुमान मंदिर एवं आश्रम कैचीधाम,1983
20. राजीदा, रवि प्रकाश पाण्डे, अलौकिक यथार्थ श्री नीब करौरी जी महाराज ,श्री हनुमान मंदिर एवं आश्रम कैचीधाम,1983
21. शर्मा, महेश दत्त : कैंची धाम के बाबा श्री नीम करोली महाराज, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली,2024
22.https://www.etvbharat.com/hindi/delhi/bharat/master-plan-readyunder-manaskhand-project-for-beautification-of-kainchi-dham/na20230302194834208208185